भागवत सार

(मोक्ष प्राप्ति का सरल आधार)

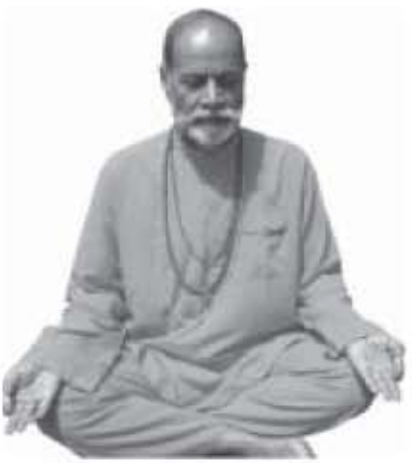

संत श्री हरि

ई-मेल : santshrihari@gmail.com

www.meditationandyoga.in

मोबाईल : 09319412158 / 09810020570

प्रकाशक

संत श्री हरि योगा समिति

ऋषिकेश

पंजाब नेशनल बैंक, खाता संख्या : 0836021200000011

ई-मेल : santshrihari@gmail.com

www.meditationandyoga.in

मोबाईल : 09319412158 / 09810020570

© संत श्री हरि

प्रथम संस्करण : अगस्त, 2010 (11000 प्रतियां)

मूल्य : कम से कम 10 मिनट का अध्ययन

साज-सज्जा : हरीशंकर मिश्रा, मो. 9810733318

मुद्रक : मेहरा ऑफसेट प्रेस, न. दिल्ली

॥ श्री हरि ॥

भागवत सार

भगवान देवाधिदेव महादेव के आशीर्वाद से प्राप्त श्री शुकदेवजी, श्री वेदव्यासजी के पुत्र थे। जोकि अग्नि के समान तेजस्वी, जलतुल्य सरस, शीतल स्वभाव, वायु के समान गतिशील, पृथ्वी के समान क्षमाशील व सहनशील तथा आकाश के समान व्यापक थे। श्री शुकदेव जी पैदा होने के पश्चात् बिना उपनयन संस्कार हुए ही सन्यास व्रत लिये जंगल की ओर चल दिये थे।

श्री वेदव्यासजी पुत्र वियोग में व्याकुल होकर "हे पुत्र! हे पुत्र! आप कहाँ जा रहे हो?" यह कहते हुये उनके पीछे-पीछे चलने लगे, परन्तु श्री शुकदेवजी वापस नहीं लौटे।

जंगल में पहुँच कर श्री शुकदेवजी एक गुफा में बैठकर समाधि में लीन हो गये। श्री वेदव्यासजी पुत्र वियोग की निराशा से दुःखी होकर मन ही मन में सोचने

लगे कि अब मैं किसकी शरण में जाऊँ? उन्होंने पुत्र के संस्कार को जागृत करने के लिये श्रीमद्भागवत् के इस श्लोक का जोर-जोर से उच्चारण करना शुरू कर दिया।

अहो बकी यं स्तनकालकूटं
जिघांसयाऽऽपाययदप्य साध्वी।
लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं
कं वा दयालुं शरणं व्रजेम।

भावार्थः

"ओह! भगवान श्री कृष्ण की दया का मैं कहाँ तक वर्णन करूँ कि नीच राक्षसी पूतना ने भगवान को मारने के उद्देश्य से अपने स्तनों में कालकूट विष भरकर उनको पिलाया था। इतना करने पर भी भगवान ने उसे माता के समान मानकर उन्हें अपना लोक दे दिया था। इस प्रकार विष देने वाले को भी बदले में अमृत प्रदान करने वाला ऐसा दयालु देवता कौन है जिसकी शरण मैं ग्रहण करूँ? अर्थात् भगवान श्री कृष्ण की ही शरण में जाता हूँ।"

यह भावपूर्ण श्लोक सुनकर श्री शुकदेवजी की समाधि भंग हो गयी। वह भाव-विभोर होकर गुफा से बाहर निकल आये और इस श्लोक की ध्वनि के माध्यम से श्री व्यासजी के निकट आ पहुँचे। श्री शुकदेवजी पूज्य पिताश्री को देखकर भाव विभोर होकर अश्रुपात करते हुये दौड़कर उनके चरणों में गिर पड़े और बोले– पिताजी! एक बार पुनः श्लोक सुना दीजिए। व्यासजी ने अपार स्नेह के साथ पुत्र का आलिगंन किया और कहा बेटा- आश्रम पर चलो वहीं पर आपको श्लोक सुनाऊँगा। श्री शुकदेवजी भगवान श्री कृष्ण की महिमा के गुणों से आकर्षित होकर पूज्य पिताजी के साथ आश्रम पर पधारे और व्यासजी ने वह श्लोक नहीं सुनाकर उन्हें सम्पूर्ण भागवत का अध्ययन कराया।

यह श्लोक ही सम्पूर्ण भागवत् का सार है। अतः प्रतिदिन निराहार रहकर इस श्लोक का पठन एवं श्रवण करने से सम्पूर्ण भागवत के पठन एवं श्रवण का पुण्य एवं लाभ प्राप्त होता है।

इस श्लोक के पश्चात् नीचे लिखी गई प्रार्थना अवश्य करें।

दैनिक प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारें हाथों में,
है जीत तुम्हारे हाथों में,
और हार तुम्हारे हाथों में॥
मेरा निश्चय बस एक यही,
इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूं दुनियाभर का,
सब प्यार तुम्हारे हाथों में। अब
जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं,
ज्यों जल में कमल का फूल रहे॥
मेरे सब गुण-दोष समर्पित हों,
गोपाल तुम्हारे हाथों में॥ अब.
यदि मानस का फिर जन्म मिले,
तो तब चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की इक इक रग का,
हो तार तुम्हारे हाथों में॥ अब.

जब जब संसार का कैदी बनूं।
निष्कामभाव से कर्म करूं॥
फिर अन्त समय में प्राण तजूं।
निराकार/साकार तुम्हारे हाथों में॥ अब.
मुझमें तुझमें बस भेद यही,
मैं नर हूं तुम नारायण हो॥
मैं हूं संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में॥अब.

प्रतिदिन प्रातःकाल जलपान करने से पूर्व इस श्लोक एवं प्रार्थना का अभ्यास सपरिवार करके पुण्य एवं लाभ का अर्जन करें।

भागवत कथा का श्रवण एवं पाठन निराहार रहकर ही करने से पुण्य लाभ होता है। यदि कथा के दौरान एक पल भी ध्यान बँट जाये तब भी भागवत कथा का श्रवण निष्फल हो जाता है।

With Best Compliments
From

FOR TRADE ENQUIRIES CONTACT : 09830014404 (MOB.)
E-mail : treat@vsnl.com